REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 6 | MARCH - 2019

तमस रात्रिमां मानवताना टमटमता दीवडानुं नाटक "जिसे लाहोर नइ देख्या ओ जम्याइ नइ"

Dr. Hitesh Gandhi
M.Phil., Ph.D. , Supervising Teacher for Ph.D. and Associate Professor Ratansinhji Mahida College, Rajpipla, Gujarat.

प्रस्तावना :

आजे देश अने समाजमां घणुं ध्रुवीकरण जोवा मळे छे. कयांक सदभावना जोवा मळे छे तो बीजी तरफ धृणा जोवा मळे छे. कयांक मानवतानो अभाव छे तो कोइ तरफ अपमानीयता छे. कुटिल राजनीति अने मानवीय सबंधो वच्चे धर्म-अधर्मनी पण द्वन्द्वात्मकता जोवा मळे छे. आ द्वन्द्वात्मकता अने असमंजस परिस्थिति वच्चे सामान्य मानव अवाक बनी आ बधाथी पर अेवी "मानवता" नी आश लगावी बेठो छे, त्यारे असगर वजाहतना बधा ज द्वन्द्वथी उपर ऊठी मानवतानी महेक प्रसरावतुं, विभाजननी पृष्ठभूममां लखायेलुं अ ने विभाजननी तमस रात्रिमां मानवताना टमटमता दीवडा निरुपतुं नाटक "जिस लाहोर नइ देख्या ओ जम्माइ नइ" (ले. असगर वजाहत, वाणी प्रकाशन, नवीदिल्ही, आ. २०१०) नुं सहेजे स्मरण थइ आवे तेम छे.

उत्तर प्रदेशना फतेहपुरमां जन्मेला अने त्रण वार्ता संग्रहो, चार नवलकथा आपनार टेलिविजन सिरियल तथा फिल्म लेखन अने निदर्शन करनार असगर वजाहत छ नाटक पण आपे छे जेमां धर्म अन मानव धर्मने उजागर करता वास्तववादी धरातल पर लखायेल नाटक जिस लाहोर.... ना देशविदेशमां अनेक प्रयोग थया छे, ख्याति प्राप्त करी छे आ पूर्वेमां तेमना नाटको "इन्ना की आवाज" अने "वीरगति""स्टाइलाइझ्ड" नाटको छे अेमां वास्तव अने कल्पनाना माध्यमथी "फोल्स" क्रिअेट करवामां आव्युं छे जे अेक "स्टाइल" ना रुपे सत्त्यने उदघाीटत करे छछे परंतु जिस लाहोर ...वास्तविक धरातल पर चालतुं नाटक छे अने आथी ज "स्टाइलाइझ्ड"-लोकशैलीना चाहक हबीब तनवीरे प्रथमवार आ नाटक कर्युं त्यारे घणाने आश्चर्य थयुं हतुं. हबीब तनवीरे आ नाटकना मर्मने पामी अेने वास्तववादी ढबे कर्युं हतुं. कन्नड गुजराती, मराठी, पंजाबी, उर्दू जेवी भारतीय भाषामां अनुवादित आ नाटक हबीब तनवीर, वामन केन्द्रे, दिनेश ठाकुर, रमेश आर. वेन्कटेश के वगेरेअे मीचत कर्युं छे आ नाटकने भारतनां मुख्य शहेरो उपरांत वोशिंग्टन, सिडनी, लाहौर, कराची अने दुबइ जेवा स्थळोअे भजवायुं छे. आथी महत्त्वपूर्ण भारतीय नाटकोमां जिस... नो उल्लेख अनिवार्य थइ रहे छे.

लाहौरनी पृष्ठभू धरावतुं आ नाटक १९४७ना विभाजननी करुणांतिकाने निरुपे छे. फेलायेली हिंसा, अमानवीयता, क्रूरता अने मूळसोता उखडी जवानी परिस्थितिनो सामनो करवो पडयो होय तेवुं इतिहासमां भाग्ये ज बन्युं छे जन्माराओथी रहेता लोकोअे रातोरात पोतानुं वतन, पोतानी संपत्ति छोडी निर्वासित बनी बीजी ज भोमका पर स्थळांतर करवानी विभिषिकानी अनुभवगाथा इतिहास पाना पर भाग्ये ज आलेखायेली जोवा मळे छे लखेकना परिचित उर्दूना वरिष्ठ पत्रकार अने विभाजनना कारणे लाहौरथी दिल्हीमां स्थळांतरित थयला संतोषकुमारना

भाइनी रमखाणोमां हत्त्या करवामां आवी हती. घणां वर्षो बाद लाहोर जइ आव्या पछी, तेओअे, विभाजन बादलाहोरमां रही गयली अेक हिन्दु वृद्धा विशे "लाहौरनामा" नामनुं "प्रवास संस्मरण" प्रकाशित कर्युं हतुं.जेमांथी प्रेरणा मेळवी तेमज मोहल्लामां आत्मीय सबंध राखनार हिनदु वृद्धा अेकली रही गइ होय तो मोहल्लामां कट्टरवादी लोको पण हशे जे आ वृद्धाने नापसंद करता हशे अेवा विचारे अेक विरोध-संघर्ष रची, १९८० मां लेखके नाटक लखवुं शरु कर्युं हतुं. साथे साथे विभाजन पहेलां सरकारी नोकरी करता लेखकना संबंधीने, तेमने पाकिस्तानमां अेलोट करेली हवेलीमां जोयेला भयावह दृश्योनी - डाइनिंग टेबल पर पीरसेली प्लेटो, बाळकोना रुममां विखरायेलां रमकडांनी हृदय कंपावी मूके तेवी संवेदना द्वारा लखेक नाटकने अेक नवो आकार आपे छे अने आथी ज आ नाटकने लेखक विभाजन वखतना हिन्दु मुस्लिम रमखाणोमां शहीद थयेला संतोषकुमारना भाइ कृष्णकुमार गोर्टू अने अेवा बे निर्दोष लोकोने अर्पण करे छे.

हवेली, मस्जिद अने चानी दुकान जेवा त्रण सेट अने सोळ दृश्य धरावतां नाटकमां पंचावन वरसना सिकंदर मिर्झा, ४प वरसनी तेमनी पत्नी हमीदा बेगम, ११-१२ वरसनी छोकरी तनवीर बेगम-तन्नो, र४-रप वरसनो मुस्लिम रमखाणोमां शहीद थयेला संतोषकमारा भाइ कृष्णकुमार गोर्टू अने अेवा बे निर्दोष लोकोने अर्पण करे छे.

हवेली, मस्जिद अने चानी दुकान जेवा त्रण सेट अने सोळ दृश्य धरावतां नाटकमां पंचावन वरसना सिकंदर मिर्झा, ४प वरसनी तेमनी पत्नी हमीदा बेगम, ११-१२ वरसनीछोकरी तनवीर बेगम-तन्नो, र४-रप वरसनो सिकन्दर मिर्झानो छोकरो जावेद, नाटकनुं मुख्यपात्र ६प-७० वरसनी रतननी मा, मोहल्लानो मुस्लिम लीगी नेता पहेलवान, पहेलवाननो पंजाबी दोस्त अनवर, पहेलवाननो मोहाजिर दोस्त सिराज, पहेलवाननो बीजो मित्र रझा, सिकन्दर मिर्झानो पडोशी हमीद हुसेन, ३प-३६ वरसनो सिकन्दर मिर्झानो पडोशी शायर नासिक काजमी, ६प-७० वरसनो मस्जिदना मौलवी इकरामुदीन, ४० वरसनो चावालो अलीमनुदीन, पहेलवानना दोस्त मुहमद शाह, मुस्लिम लीगी कार्यकर्ता फयाझ अने मुस्लिम लीगी नेता जेवी पात्रसृष्टि छे.

नाटकनुं प्रथम दृश्य, पाकिस्तान अलग देश बनता तरत पहेलांनुं छे लाहोरना अेक विस्तारमां केटलाक प्रदर्शनकारीओना नार-अे-तकबीर ... अल्लाह-ओ-अकबर ... ले के रहेंगे ... पाकिस्तान-पाकिस्तान जेवा नारा स्पष्ट संभाइ रहया छे तेओ पंजाबना तत्तलीन पंजाबना मुख्यमंत्री खिजिर हयात खां नो "खिजिर पुतर कुत्ती दा" जेवो हुरियो बोलावी रहया छे तो टोळामांथी कोइक खिजर मुस्लिम लीगमां जोडाइ गयाना समाचार लावे छे तो पांछु खिजरने पोताना भाइ तरीके ओळखावे छे अने जयारे खिजरे लीग जोइन कर्यानी वात अफवा हती ते टोळु जाणे छे त्यारे फरी खिजिर पुतर कुत्तीदाना नारा लगावे छे. आम लेखके प्रथम दृश्यमां अलग पाकिस्तानननी मांग निरुपी "ले के रहेंगे.. पाकिस्तान.. पाकिस्तान..." जेवा नारा निरुपी विभाजनना समयनो नाटयात्मक रीते सीधो ज विषय प्रवेश करावी, वस्तु स्फोट-अेकपोझिसन करे छे. खिजिर पुतर कुत्तादाथी खिजिर साडा भाइ है (खिजिर आपणो भाइ छे) अनेपुनः खिजिर पुतर कुत्तीदा... जेवा वारंवार बदलता विचारो निरुपी टोळाशाहीनी मानसिकतानुं आलेखन कर्युं छे. विभाजन पण आ टोळाशाहीना कारणे ज ऊभी थयेली परिस्थिति छे. तेमां समजण ओछी अने असमजण वधारे हती, पागलपन वधारे हतुं. जेना कारणे लाखो लोको बेघर बनेला, मोतने भेटेला अने करोडो लोकोअे स्थळांतर कर्युं हतुं. दृश्यना अंते लेखकने मंच पर अंधारु करी हलका प्रकाशमां लूंट-फाट, स्थळांतर थता शरणार्थीओना काफला सूक रीते दर्शावी अज्ञानताना अंधकारने विभाजननी भयावहताने, करुणताने थोडीक ज, परंतु नाटयोचित क्रिया द्वारा प्रतीकात्मक रीते मूकी आपवामां लेखक सफळ रहया छे आ क्षणे ज बेकस्टेजमांथी नासीर काझमीनुं गीत संभळायुं छे : "ओर नतीजे में हिन्दोस्तां बट गया, ये जमी बाट गयी, आसमान बट गया, तर्जे तहरीर, तर्जे बयाट बट गया..." (पान-११)

दरेक दृश्यना अंते लेखके नासीर काझमीनी नझमो मूकी आपी छे जे दृश्यना भावने वधु गाढ बनावे छे. आ नझमो नाटक माटे उपकारक तो नीवडे छे परंतु प्रथम दृश्यना अंते मूकेली नझम "और नतीजे में हिन्दोस्तां बट गया..." विभाजनने लेखके आंगिकम द्वारा दर्शाव्या बाद मुखर रीते आवती होइ सर्जनात्मकताने वधु उपकारक बनी रहे छे तेवुं कही शकाय तेम नथी.

बीजु दृश्य विभाजन बाद बे त्रण महिना पछीनुं छे. लखनउथी आवेला अने बे त्रण महिना शरणार्थी केम्पमां रहेला सिकन्दर मीर्झाने कस्टोडियन लाहोरा मशहुर झवेरी रतनलालनी बावीस ओरडानी हवेली "अेलोट" करेली छे मिर्झा आ हवेलीने पोते लखनउमां छोडेली मिलकतना अवेजमां मळेली मानी ले छे. हवेली मोटी होवा छतां रातरानी न होवानो अफसोस पण अनुभवे छे."हम अपनी जो जायदाद लखनउ में छोड आये है, उसके अवेजमां समजो ये हवेली मिली है हमारे घर की तो बात ही कुछ थी. सहन में रात की रानी की बेल यहा कहा है ?(पान-१३) हवेली जोइने हमीदा बेगमने संतोष थाय छे. शरणार्थी केम्पथी छूटकारो मरूयो ते माटे खुदा प्रत्ये आभार व्यकत करवा मानेली मानतानी बे रकातनी नमाज पढवाना छे. घणा वखतथी बहारनुं खाधुं होवाथी ते रसोडुं जोवा जाय छे त्यारे तेनुं ह्रदय गभराय छे कारण के तेने थाय छे, खबर नही आ कोनुं हशे ? केवां अरमानोथी बनाव्युं हशे? त्यारे ज तन्नो आ हवेलीमां कोइक छे तेवी बूमो पाडती आवे छे नाटकना मुख्य पात्र रतननी मानो नाटकमां प्रवेश थाय छे. रतननी माने सिकन्दर मीर्झानी घरमां घूसी आव्यो छे तेथी आश्चर्य थाय छे आ घर तेना दीकरा रतन झवेरीनुं छे जे दंगा फसाद शरु थाय ते पहेला कोइ हिन्दु ड्राइवरने शोधवा घरेथी नीकरूयो हतो जे आज दिन सुधी परत आव्यो नथी.मिर्झा जणावे छे के हवे पाकिस्तान बनी चूकयुं छे अने लाहौर पाकिस्तानना भागे आव्युं छे. तेथी हवे हिन्दु माटे आदेशमां कोइ जग्या नथी."अब यहा पाकिस्तान में कोइ हिंदू नहीं रह सकता" (पान-१प) रतननी मा-माजी हवेली छोडवा इनकार करी दे छे त्यारे मिर्झा गुस्से भराय छे अने कहे छे के"अगर आप जिद पर कायम रही तो शायद ..." अेम कहीं मारी नांखवानी पण तैयारी होवानुं सूचन करे दे छे. अहीं लखनउथी आवला निराश्रित मिझा अने जेनुं आ घर छे मिलकत छे, जेनुं वतन छे ते वच्चे प्रथम विरोध जोवा मळे छे आ विरोध ज नाटकमां आगळ जतां लागणीमां "Transform"- रुपांतरित थाय छे ते ज नाटकनुं मूळ सूत्र छे. आथी ज आ नाटक "Transformation" पण बनी रहे छे. तेमने आ मकान सरकारी हुकमथी मळेलुं छे, कस्टोडियने "alot" करेलुं छे. जेनी दलीलो करे छे परंतु रतननी मां जीवते जीव हवेलीमांथी जतां रहेवानो इन्कार करी दे छे हमीदा बेगम सिकन्दरनी मीर्झाने कस्टोडियन पासे जइ फरियाद करवा जणावे छे. तन्नो रसोडामां रांधवा जाय छे. तेने लाकडां जडतां नथी, त्यारे रतननी मा नानी ओरडीमां पडेला लाकडा बताव`छे त्यारे हमीदा अने तन्नो बेउ अेकमेक सामे आश्चर्य अने खुशीथी अेकबीजानी सामे जोता रहे छे."दिलसे लहरसी उठी ह अभी कोइ ताजा हवा चली है अभी..." नां अंतराल गीत साथे दृश्य पुरुं थाय छे आ दृश्यमां मिर्झा अने रतननी मा "मूळ""original" अने "Migrated" वच्चेना प्रथम परिचयना संघर्ष अने ते पण अस्तित्त्व मीटाववानी कक्षाना संघर्षने माणसने मूळ तत्त्व भूख-रसोडुं धीरे धीरे नजीक लावे छे. हमीदा बेगम, तन्नोरतननी मा नजीक आवे छे. नीकटतानी शरुआत घरनी स्त्रीओथी थाय छे अे पण अेक सूचक छे.

पछीनुं दृश्य कस्टोडियननी ओफिसनुं छे. सिकन्दर मिर्झा हवेली बाबते फरियाद करवा आवला छे ओफिसना कलार्क मिर्झाने समजावे छे के तेमने जो वांधो हशे तो कस्टोडियन तेमना कोइ नजीकना सींधीने फाळवी देशे.आम तो मिर्झा नशीबदार छे के तेमने लाहौरना हार्द समा कूचा जौहारियांमां आटली मोटी हवेली मळी छे, अने पेली वृद्धा पण बेचार वरस जीवशे पछी हवेली पर कबजो अेमनो थइ जवानो छे."दो चार साल में जहन्नुम वासिल हो जायेगी .. पूरी हवेली पर आपका कबजा हो जायेगा...." (पान-र१) कलार्क बुढीने लाइन पर लइ आववानुं कहे छे, लाइन पर न आवे तो याकूब खा पहेलवानना संपर्क करवा कही छे आंगळीथी गरदन कापी मारी नाखवानो इशारो करे छे. त्यारे सिकन्दर मीर्झाने केम्पमां गुजारेला बे महिना याद आवता ज जे ते परिस्थितिनो स्वीकार करी कोइपण किंमत पर हवेली नहीं छोडवानो निर्णय करी ले छे. फरी अंतरालनुं गायन आवे छे "शहर सुनसान है किधर जाये खाक होकर कहीं बिखर जाये..." अने दृश्य पूरुं थाय छे.

कस्टोडियन ओफिसथी निराश थयेलो मिर्झा चोथा दृश्यमां हवेलीमां परत आवे छे अने घरना सभ्योने बधी वात जणावे छे. हमीदा "अै में उस हरामजादी को चोटी पकडकर बहार निकाले देती हू ... हो गया किस्सा तमाम ..." (पान-र३) सिकन्दर माजीने चूपचाप हिन्दु केम्पमां छोडी आववा तैयार थाय छे अने जो माजीअे अहीं रहेवुं होय तो धर्म बदलवो पडशे अेवुं समजाववा, माजीने बोलावी लाववा जणावे छे. तन्नोना "दादी.. दादी"

शब्दो सांभळी माजी खुश थइ जाय छे. सिकन्दर मिर्झा माजीना कारणे पडती मुश्केली विशे जणावे छे त्यारे माजी निर्दोषभावे कहे छे : "तुसी फिक्र न करो... मेरे कोलो जो हो सकेगा, करांगी" (पान-रप). हमीदा अने मिर्झा तेमनुं अहीं रहेवुं ठीक नहीं होवानुं जणावी, तेमनुं जबरदस्ती धर्मपरिवर्तन करावाशे तेथी अहींथी जता रहेवा समजावे छे. त्यारे माजी पोताने दीकरो अने वहु मरी जवाथी पोते पण मरी चूकी छे. तेमना माटे जिनदगी अने मौत वच्चे कोइ फरक रहयो नथी, आथी आ हवेलीमांथी निकळवानो कोइ सवाल ऊभो थतो नथी तेवुं जणावी दे छे. आ सांभळी गुस्से भरायेला मिर्झा पोाने "गेर मुनासिक हरकत करने के लीये मजबूर.." न करवा जणावे छे, तो हमीदा बगम पण "निहायत सखत दिल ओरत हे, डायन" (पान-र६) कही पोताने रोष काढे छे. त्यारे दीकरो जावेद पोतानी रीते रस्तो काढवाघ, परवानगी इजाजत मागे त्यारे मिर्झा "जे चाहो ते करो-" अेम कही परवानगी आपी दे छे. पुनः अंतराल गीत "फूल खुश्बू से जुदा है अबके / यारो से कैसी हवा है अबके"साथे दृश्य पूरुं थाय छे.

पांचमा दृश्यमां अलीम उद्दीन चावालानी दुकाने पहेलवान आवे छे. अलीम रतन जौहारीनी हवेलीमां अेनी मा होवाथी मुसीबत ऊभी थइ होवानुं जणावे छे. पहेलाने अेमां पोतानो लाभ जणाय छे तेथी जे बोली ऊठे छे " अजै दहीं और मथा आयेगा... अजै थी और निकलेगा" (पान-र८) आवी लालचमां राचतो पहेलवान नासिर काजमीने पोतानी कोमनो खादिम-रखेवाळ तरीके ओळख आपे छे, मळवा आवेला मिर्झाना दीकराने रस्तो काढी आपवा तैयारी बतावे छेः "असी उस नू ठिकाणे लगा सकद हा... पर ओ वी आसान नहीं है.. पहेले जो कम मुफत हो जान्दा सी अब उसके पैस लगने लगे है .... समजे... (पान-३०) आम कोमना रखेवाळ तरीके ओळख आपता पहेलवाननां कार्यो जुदा ज प्रकारनां छे. पहेलवान आ प्रकारना रखेवाळोना "प्रतिनिधिरुप" पात्र-टाइप केरेकटर बनी रहे छे. पुनः अंतराल गीत साथे दृश्य पूरुं थाय छे

छठा दृश्यमां रतननी मानुं चरित्र उपवासी आपवानो यत्न करवामां आवेलो छे. पडोशमां गजाधरना मकानमां रहेता हिदायत हुसैने केटलाक लोकोने जमवा बोलाव्या छे पण घरमां कोलसा न होवाथी बेगम हिदायत हुसैन मुश्केलीमां मुकाइ छे. आथी ते लाकडां मागवा आवी छे. अेक टोकरी कोलसा मागवा आवेली हिदायत हुसेननी बेगमने बे टोकरी कोलसा आपवा जणावे छे. तन्नो माजीने दादीमां दादीमां करीने बोलावे छे ते रतननी माने घणुं सारुं लागे छे : "में जादवी तेरी आवाज सुनदी आ मनु लगदा रय की मैं जिन्दा हाँ..." (पान-३२) तो हमीदा बेगमने पण पोताने माजी कहीने बालाववा कहे छे.

हमीदा बेगम अहीं चचींडाना मळता होवानी फरियाद माजीने करे छे त्यारे माजी ते "खिराटा" ना नामे शाक बजारमां मळता होवानुं जणावे छे. हमीदा बेगमने हजी आ शहेर समजातुं नथी.त्यारे माजी कहे छे के "लाहोर तो बड्डा दुजा शहर ते साड्डे हिंदुस्तान विच है ही नहीं... मसल मशहूर है कि जिस लाहौर नइदेख्या ओ जन्माइ ही नइ'ह (पान-३३) माजी माटे लाहौर अनन्वय छे लाहौर तेने मन हिन्दुस्ताननुं मोटामां मोटुं शहेर छे. लाहोरमां जेणे जोयुं नथी ते तो जन्म्यो ज नथी, जन्म निष्फळ गयो छे आम लाहोर माटेनो, पोताना शहेर, पोताना वतन माटेनो अहोभाव भारोभार जोवा मळे छे. माजी लाहौरने हिन्दुस्ताननुं माटामां मोटुं शहेर गणावे छे अे ज दर्शावे छे के माजी लाहौरने हजी हिन्दुस्तानमां ज गणे छे, हजी तेपाकिस्तानना स्वीकार करी शकती नथी.तोलाहोर - तेमनी जन्मभूमि तेमने मन श्रेष्ठतम छे हमीदाने पोतानुं वतन लखनउ वधार सारुं लागे छे. हमीदाने पण लागे छे के लखनउ सामे लाहौरनो मुकाबलो नथी. लाहौर लखनउना तोल न आवी शके."इ लेकिन लखनउ कया मुकाबला" आम पोतानां जन्मभूमि वतन दरेकने श्रेष्ठतम लागे छे. माजीने जेटलुं मान लाहौर माटे छे तेटलुं ज मान हमीदाने लखनउ माटे छे, शायर काझमीन अंबाला माटे छे. दरेकने पोतानी जन्मभूमि माटे गर्व छे अने अेनो अभाव लागी रहयो छे तेथी व्यथित पण थइ रहया छे.

हमीदा रु कयां मळे छे ते माजीने पूछे त्यारे माजी लाहोरनीगली गलीनो परिचय करावी आपे छे."देओ जावदनू कहो अे त्यो निकले रेजीडेंसी रोड तो गली हारी ओम वाली मुड जाअे, उत्थो छत्ता अकबर खा

पहुंचेगा... उत्थे दो गलियों जान्दिया सजजे खब्बे दिखाइ देणगियां... इक हैगली रुइवाली ... सैंकडो रुइ दियादुकानां" (पा-३४) अहीं लेखक लाहौरा झीणवटभर्यो परिचय आपे छे. आ नाटक लखायुं त्यारे लेखकने लाहौरनी भूगोळनो खास्सो परिचय न हतो परंतु पंजाबना अग्रणी पत्रकार गुरुचरणसिंहे लाहोरनी गली गलीथी वाकेफ अेवा लाहोर इलेकिट्रिसिटी बोर्डना मिटर रीडरनो परिचय करावी आप्यो हतो. मीटर रीडरना अनुभवे लेखक लाहोरना रस्ता रस्ता आलेखे छे.

आ ज समये सिकन्दर मिर्झा आवी माजीने जोइ मोढुं बगाडे छे. माजी जतां रहेतां हमीदा बेगमने कही दे छे के "हम इनस पीछा छुडाने के चककर में है और आप इन्हे गले का हार बनाअे हुअे है." (३४) तेओ आ माजीथी पीछो छोडावी लेवानुं वधु योग्य समजे छे. कारण के भविष्यमां कोइ अेमनुं सगुं आवी जाय तो मुश्केली पडी शके तेम छे. जावेदे पहेलवान साथे अेक हजारमां वात पाककी करी लीधी छे. आ वातथी हमीदा चोंकी जाय छे. गभराइ जाय छे. पोते कोइने जणावी दे छे. अेक समये वृद्धोने डायन कहेनारी हमीदा हवे माजीने मारी नाखे ते माटे ते तैयार नथी.अहीं'Transformation' रचाय छे.Crual to Kind. तो Human Behavior पण जावा मळे छे. साथेसाथे रही अेकबीजाने 'Adjust' करतां थइ जाय छे. पोताना ज घरमां आंगतुक-आउटसाइडर बनी गयेली वृद्धानो धीरे धीरे धीरे मिर्झा पीरवार स्वीकार करतो थइ जाय छे. अहीं मानवतानो संचार थतो जोवा मळे छे. अंतराल गीत पण सूचक रीते मूकवामां आव्युं छे : दिल में कइ लहर सी ऊठी है अभी / कोइ ताजा हवा चली है अभी...

सातमुं दृश्य हवेलीनुं छे. सिकन्दर मिर्झा पेपर वांचता होय छे त्यारे पहेलवान तेना मित्र साथ आवी उपरनी अगियर मजली तेना दोस्तने फाळवायानुं जणावी, उपरना ओरडा पडावी लेवानी कोशिश करे छे. मिर्झा पर प आरोप मुके छे के तेने अेक हिन्दु काफिराने छुपावी राखी छे."तुसीअेक हिन्दु काफिरानुं अपने घर विच छुपा रख्या है" (पान-३८) अने "इस्लामी बिरादरी दे नाते त्वाडी मदद करन आये सी" आ रीते इस्लामने पोताना स्वार्थ माटे उपयोग करी घर खाली करावावा जेवा गेरकानूनी काममां पण धर्मने वच्चे लइ आवे छे, धर्मने हाथो बनावे छे. तो मिर्झा पण सामे कही दे छे के "इस बात में इस्लाम और कुफ कहां से आ गया" (पान-३८) पहेलवान वृद्धाने मारी नाखशे अने पोते फसाइ जशे अे बीके तेमनी पूरती सुरक्षा करवा जणावे छे."अैसा करो कि उनकी इफाजत का पूरा इतजाम इस तरह करो कि उन्हे पता न लगने पाये " (पान-४०) हवेलीमां सुनकार छवाइ जाय छे. अंतरालना गीत "मैं हुं रात का अेक बजा है / खाली रस्ता बोल रहा है / आज तो यूद्ध खामोह है दुनिया / जैसे कुछ होनेवाला है... साथे सातमुं दृश्य समाप्त थाय छे आ दृश्यमां सिकन्दर मिर्झा चरित्रमां आवेलुं परिवर्तन वृद्धानी देखरेख राखवानी तालवेली, पहेलवाननुं तकलादी धार्मिकपणुं, पडाववृत्तिगीरी अने इस्लामनो दुरुपयोग जोवा मळे छे.

धमकाववा आवला पहेलवानने सिकन्दर मिर्जाअे मचक न आपता, पोताना स्वार्थ माटे धर्मने आगळ धरी मस्जिदना मौलवी इकराम उद्दीनने फरियाद करे छे पहेलवान पोताना विस्तारमां कूफ्र-अधमता फेलावाइ रही होवानुं जणाव छे, कारण के पोताना मोहल्लामां अेक हिन्दु स्त्रि रही गइ छे. भारत गइ नथी. मुसलमान भाइओना विभाजन वखतना कत्लेआमनो बदलो लेवानी आग तेनामां भडकी रही छे. मौलवी पहेलवाननी वात सांभळी मुश्केल समयमां कोइ आशरो मागे तो अेने आशरो आपवो जोइअे अने मुसलमान भाइओ पर थयेला जुल्मनो बदलो जुल्मथी न लइ शकाय तेवुं समजावे छे."हुकमे खुदाबंदी है कि अगर मुश्कीन में से कोइ तुमसे पनाह मांगे तो उसको पनाह दो... जुलम को जुलम से खतम नहीं कर सक दे..." (पान-४३) आम मौलवी पहेलवानने साचो मुसलमान धर्म समजावे छे. जो आम न करी शके तो तेवी रीते कही शकाय के ते मुसलमान छे. का रण के तेमनो धर्म रहेमदिली शीखवाडे छे. छेल्ले तात्त्विक वात कहे छे के जो लडवुं होय तो पोताना अवगुणो सामे लडवुं जोइअे अे ज सौथी मोटी जेहाद छे. वृद्ध स्त्री साथे लडवुं लस्लाम नथी.सामान्य रीते विभाजन साहित्त्यमां के तमस, खुदा के लीये विगेरे फिल्मोमां धर्मगुरुओनुं चरित्र धमाध-कट्टरवादी वधु जोवा मळे छे. जयारे अहीं मौलवीनुं

प्रगतिवादी स्वरुप जोवा मळे छे. अंतरालना गीत साथे आ दृश्य पण पूरुं थाय छे.अहीं धर्मगुरुना पात्रमां अेक नवो आयाम जोवा मळे छे.

नवमुं दृश्यअलीमनी चानी लारीनुं छे. शायर नासीर काझमी चा पीता होय छे त्यारे पहेलवान आटला बधा मुसलमान वच्चे अेक हिनदु वृद्धा दबदबाभेर फरी रही छे, रोज रावीमां नाहवा जाय छे, पूजा करे छे, अेमने पोताना धर्मनी वाता कहे छे छतां कोइनुं लोही उकळतुं नथी.पाकिस्तानमां अधर्म फेलाइ रहयो छे. आथी माजीने ता भारत मोकली देवी जोइअे तेवुं नासिर काझमीने जणावे छे. बीजी तरफ नासीर काझमीने आमां कशुं वांधाजनक नथी लागतुं.वृद्धा जे करे छे ते अधर्म छे तो रावीमां न नाहवुं, पूजा न करवी कोइने अंगुठो न बताववा अे इमान छे ! तेमने तो बीजाना धर्मनी वातो सांभळवी पण अधर्म नथी जणाती.कारण के कुरानमां यहुदी धर्मनो उल्लेख तो छे ज. पहेलवानना जोडे आवेलो अनवार पण कहे छे के ते कोइनाथी डरती नथी ते तेमने बर्दाश्त थाय तेम नथी. आथी तेने भारत मोकली आपवा जणावे छे नासिरने लागे छे के ते नथी डरती ते लोको बर्दाश्त करी शकता नथी.जयारे काझमी अे भारत न जाय तो न जाय, अे चाहे अहीं रहे या भारत जाय."कयां आपने ठेका लिया हैलोगो को इधर उधर भेजने का ?ये उसकी मर्जी है...वो चाहे यहा रहे या भारत जाये..." (४८) आ धर्म पण पसंद करेली बाबत नथी.अेमां कोइ पसंदगी नथी.जे मा-बापनो धर्म हतो अे ज तमारो धर्म छे आथजी तो "जिस बात में तुम्हारा कोइ दखल नहीं है.. उसके लिये खून बहाना कहा तक जायज है ?" (पान-४८) आम धर्मने खूब ज मार्मिक रीते मूकी आप्यो छे. धर्म अे तो पसंदगी वगर मळेला छे अने अेना माटे आटलुं अंतिमणुं न होवुं जोइअे.

दशमा दृश्यमां हमीदा बेगमना घरमां पडोशनी स्त्रीओनी जामेली महेफीलमां हमीदा पोतानो बळापो काढे छे के अहीं लखनउमां मळतुं पान तो नजरे जोवा पण नथी मळतुं. आ शहेर तो तेने समजातुं नथी. तेने लागे छे "लखनउ में जो बात है... वोह लाहौर में कहां ..." त्यारे रतनमां समजावे छे के "पत्तर आपना वतन त अपना इ होंदा है... उसदा कोइ बदल नहीं" (पान-५०). आम फरी अेक वार वतनप्रेमनी संवेदना जोवा मळे छे. रतननी वात नीकळे छे त्यारे वृद्धानी आंखो भीनी थइ जाय छे. तेने नथी लागतुं के तेना छोकरा जीवता हशे. रेडियो पर पण घणीवार अेलान कराव्युं हतुं परंतु रतननो कशो कोइ पतो न मरूयो. (अहीं अेक प्रश्न जरुर थाय, रतननी मा वृद्ध छे ते अेकली अेकली सरकारी तंत्रमां जइ रेडियोमां अेलान करावे अने मोहल्लाना पहेलवान जेवा लोकोन खबर न पडे के लाहोरमां कोइ अेकमात्र हिन्द स्त्री अेकली रहे छे जे भावक सहजताथी स्वीकारी शके तेम नथी).आ माइ तो सवारनी नीकळे सांजे घरे आवे छे कयारेय भार लागी नथी. माजी तो सवारे रावीमां नाहवा जती रहे छे. त्यार पछी अकील साहेबने त्त्यां वडीओ बनाववा, तो नफीसाने दवाखाने लइ जवा, तो कोइना छोकरानी सारवार करवा तो सांजे वळी कोइने अथाणा नांखता शीखवाडे तो कोइने शीतळा नीकरूया होय तो अे छोकराने लइने बेसे जेथी अेनी मा रसोइ बनावी शके.आम छेक रात दसवागे घरे आवे. लेखके अहीं मजीनी दिनचर्या, माजीना परोपकारी जीवनना मोनोग्राफ आलेखे छे. मा आखो दिवस परोपकारनां कार्यो करे छे. माजीनी आ मानवता बधांनां हृदयने जीती ले छे. दरेकना मोढे माजीनुं नाम छे दरेक मर्जनी दवा माइ गणाय छे. दिवाळी आवती होइ माजी दर वरसनी जेम आ वर्षे पण दीवा प्रकटाववा अनेपूजा करवानी इच्छा मिर्झा समक्ष व्यकत करे छे. मिर्झा पोतानो कोइ वांधो न होवानुं जणावी खुशी खुशी उजववा कहे छे.

अगियारमुं दृश्य हवेलीमां छे रतननी मा दिवाळीना दीवा प्रकटावी रही छे तन्नो तेने साथ आपे छे दीवा प्रकटावतां पंकटावतां तन्नो मार्मिक सवाल पूछे छे के "अगर हम लोग और माइ अेकही घर में रह सकते हे तो हिन्दुस्तान में हिनदु और मुसलमान कयों नहीं रह शकते थे ? हमीदा बेगम जवाब आपी दे छे के रह सकते कया... सदीयो से रहते आये हैं त्यारे तन्नो हचमचावी नाखे तेवो प्रश्न पूछी ले छे के "फिर पाकिस्तान कयों बना ?" (पान-प४) केवा प्रस्तुत सवाल छे !जेनो साचो जवाब आज दिन सुधी मरूयो नथी. पूजा करीने मा ऊठे छे बधाने मीठाइ आपे छे बधा दिवाळीना शुभेच्छा पाठवे छे नासिर काझमी पण दिवाळीनी शुभेच्छा पाठववा आव्या छे. आ समये हमीद पण कहे छे के आजे माइने दिवाळी न मनावी होत तोतेमना अस्तित्त्वनो अेक टुकडो ज

कपाइ गयो होत. आम सदीओथी साथे रहेता हिन्दु-मुसलमान समाजना लोकोनुं अस्तित्त्व पण परस्पर निर्भर छे. रेडकलीफ द्वारा आंकावमां आवेली सरहद सदीओनी आत्मीयताने वहेंची ना शके.परस्पर संकळाअेलुं संयुकत जीवन छे अेकांगी केवी रीते बनी शके ! आथी नासीर खूब ज मार्मिक स्वरमां गाय छे : "बिछड गये थे जो तूफान की रात में "नासिर" सुना है .नमें से कुछ आ मिले किनारे पर" (पान-५६) धीरे धीरे बधा नजीक आवी रहया छे. अेक सौहार्दभर्युं वातावरण ऊभु थइ रहयुं.

हवेलीमां दीवा प्रकटाव्या छे पूजा थइ रही छे तेथी पहेलवानने खूब ज गुस्सो आव्यो छे तेथी ते अने तेना चमचा धडाधड करता हवेलीमां घूसी आवे छे. ते दीवा प्रकटाववा सामे विरोध करे छे त्यारे सिकन्दर मिर्झा कही दे छे के "वेली उसी की है.. उसने मुजे रहने की इजाजत दे रखी है" (प७) गुससामां आवेला पहेलवान मिर्झाने धमकी पण आपे छे : "तुसी उस काफिरानुं पनाह दे रखी है.. तुसी गैर इस्लामी काम कराते हो और हम बैठे देखते रहे, ये नहीं हो सकदा हुण असी चुप वी नहीं रह सकदे" (पान-५८) धुआंपुआं थयेलो पहेलवान मस्जिदमां जइने फीरयाद करे छे के मिर्झा साहेबना घरमां दिवाळी उजवाइ छे, खुलेआम पूजा हवन वगेरे थाय छे. दीवा करी मीठाइ वहेंचवामां आवी रही छे. उदारवादी मौलाना मिर्झा पासेथी हकीकत जाणी पूजान हकक गणावे छे. पहेलवानन मसजावे छे के माजी विधवा होइ, इस्लाममां विधवानो दरजजो ऊंचो होवानुं जणावे छे. विधवा माटे दोडनार दिवसभरना रोजा अने रातभरनी नमाज पढवा वालानी बराबर छे. इस्लाममां महजब, रंग, नस्ल अने जातनो कोइ फर्क करवामां आवतो नथी. अेम पण सिकन्दर मिर्झा पण कहे छे तेम माजी "हम सब कीइस कदर मदद करती है कि कहना मुहाल है" (पान-६१) मौलानानी आवी उदारमत वातो सांभळी पहेलवान वधु ने वधु गुस्से भराय छे "इतना इसलाम हम भी जानदे हा कि मुसलमान हिन्दुस अच्छा होंदा.." आवी संकुचित मानसिकता धरावतो पोकळ-धर्माध पहेलवान मौलानाने पण जेम तेम बोली नाखे छे तेमनी सात पेढीने जाणे छे. तेमना पिता बीजानी बकरीओ चोरता हता.. लोको कपडां आपता हता तो पहेरता हता अने मौलानाने मोहल्लावाळाओअ फाळो उघरावी भणाव्या हता - आम अेक तरफ मौलाना अने सिकन्दर मिर्झानुं उदारतावादी वलण छे तो बीजी तरफ पहेलवाननुं इस्लामनुं स्वार्थी अर्थटन करनार संकुचित मानस प्रकट करे छे.

तेरमुं दृश्य अडधी राते चानी लारीनुं दृश्य छे नासीर काव्यात्मक रीते हमीदने पानखर ऋतुनी वेदनानुं वर्णन करे छे. भारतमां जोवा मळती "श्यामा चीडिया" काळी चकली अहीं पण जोवा मळे छे. काळी चकलीना अनुषंगे नासिर साहेब बंने प्रदेशनी साम्यता दर्शावी आपे छे अहीं पण सरसर अेवी ज फूले छे, सावननी झडी पण अेवी ज लागे, वरसादना दिवसोमां मोरनी झंकार पण अेवी गूंजे छे, वसंतमां आसमाननो रंग पण अेवो ज होय छे जेवो हिन्दुस्तानमां होय छे. आम बंनेदेशना वातावरण, कुदरत, पर्यावरण, प्रकृति, मौसम बद्धे ज समानता छे. आवी संवेदनसभर वातो चालती होय छे त्यारे ज रतननी माने आवती जुअे छे. रतननी माने पूछतां कहे के तेना अहीं दाणा पाणी खूटी गया होवाथी ते दिल्ही जवा इच्छा रही छे."पुत्तर मैं दिल्ली जाननां चांहदी हा... हुण लगदा है इत्थे दाणा पाणी नहीं रया..." आम तो अेने कोइतकलीफ नथी. अहींना लोकोअे अेने अेटलां प्यार अने इजजत आप्या छे के अेना लोको पण ना आपी शकत.अने आ प्यार ज अेने लाहोर छोडवा मजबूर करी रहया छे. कारण के अेनुं लाहोरमां रहेवुं केटलाक बदमाश लोकोने पसंद नथी. तेथी मिर्झा साहेबन धमकीओ आपवामां आवी रही छे. कारण के केटलाक बदमाश मान छे के अेना अहींथी चाल्या जवाथी आ शहेर पाक थइ जशे.ते अहीं रहेतो मिझा साहेब पर मुश्केली थइशके तेमछे.परंतु मिर्झा साहेब कोइपण रीते नथी इच्छता के ते त्यांथी जती रहे.नासिर अेकदम चोकी जाय छे अने द्रढतापूर्वक अवाजे माइने जता रोके छे कारण के ते जाणे छे के माजीने तेमनुं लाहोर कयांय नहीं मळे.. जे रीते तेने अम्बाला नथी मरूयुं अने हिदायत भाइने लखनौ कयांय नथी मरूयुं. अे ज रीते माइने पण लाहोर कयांय मळे तेम नथी. अने जो माइ अहीं नहीं रहेतो तेओ बधा नागा थइ जशे - उघाडा पडी जशे. मानवता मरी परवारशे. फरी मार्मिक नजम फूल खूशबु से जदा है अबके/यारो ये कैसी हवा है अबके साथे दृश्य पूरुं थाय छे.

चौदमुं दृश्य हवेलीमां छे. रतननी मा घर छोडी जती रहेवानी हती.तेने नासिर साहेब पाछी लइ आव्या छे हमीदा अने तन्नोने लागे छे के तेमनाथी कोइ भूल थइ गइ छे अेटले माजी घर छोडीने जतां रहेतां हतां.जो तेओ चाल्यां जात तो गजब थइ जात, कारण के माजीअे तेमने बाळकोनी जेम राख्यां हतां.दरेक प्रकारना अहेसान कर्या हता.जयारे आजे तेओ स्थायी थाय छे त्यारे तेओ घर छोडीने जतां रहे ते घरना कोइ सभ्य स्वीकारी शके तेम नथी. माजी त्यारे कही दे छे के तेओने बधी खबर छे के केटलाक लोको तेमना कारणे तेमने बधाने परेशान करी रहया छे. आथी तेमने कशुं थइ जाय तो तेओ कयांना न रहेत. आ कारणथी तेओ जतां रहेवा मागता हतां. आम पण तेओ "सफ तो उपर ही हो गयी हां अज मरी तां कल मरी... इत्थे लाहौर च मरा मा दिल्ली च मरां.. मैन्नू हुण मरना ही मरना है" (पान-६६) हमीदा बेगम अने तन्नो पण तेमने कशे नहीं जवानुं जणावी तेमने पोताना सोगंद आपे छे. सिकन्दर मिर्झा पण तेओने कशे जवानी ना पाडी दे छे. तेमनुं कशुं थइ जात तो तेओ शर्मथी मरीजात."हम शर्म सेजमीन में गड जते..हम किसी से आंख मिलाने लायक न रह जाते.. अब आप कहीं नहीं जायेंगी.."(६६).माजी आ सांभळी गदगद थइ फुट फुट रही पडे छे अने लागणीवश थइ कहे छे "में किधरी नहीं जावांगी ..किधरे नहीं... त्वाडे लोकों चों ही उठांगी तां सिध्दे रबदे कौल जावांगी..." (७०) साव अजाण्या, परदेशथी आवेला, शरुमां घर पर हकक जमाववा मथता, अेक समये तेनो निकाल करवा प्रयत्न करता धरे धरे साथ साथे रहेतां रहेतां लोको साथे परस्परना भाव बंधाता जाय छे अने घर छाछेडवा मजबूर करनार ज घर छोडवानी मनाइ फरमावे छे. तो सामा पक्षे आ मारुं घर छे हवेलीथी नीकळी जवानो सवाल ज नथी कहेनार मिर्झानी जान बचाववा चूपचाप हवेली छोडीने नीकळी जाय छे. आम सर्जके अेक वर्तुळाकार रची आप्यो छे अेक वक्रता निरुपीआपी छे के अेक समये वैमनस्यना कारणे लाहोर छोडवा न इच्छती ते माजी कालांतरे लोकोना प्यारना कारणे लाहोर छोडवा मजबूर थाय छे. सर्जक द्वारा रचायेलुं जकस्टापोझिशन अदभुत बनी रहे छे तो नाटक पण पूर्णतः कलाइमेकस पर पहोंची जाय छे.

पछीनुं दृश्य अलीमनी चानी लारी पर छे अडधी रात वीती चूकी छे. वातावरणमां सन्नाटो छे नासीर अने हमीद चा पीता होय छे त्यां ज जावेद "माइ का इतिकाल हो गया" (पान-७२).समाचार लइने आवे छे. सांजे छातीमां थोडो दुःखावो थतां डो. फारुखे आवीने इन्जेकशन अनदवा आपी परंतु अचानक अत्यारे दुःखावो वधी गयो अने नाटकमां हवे समस्या उदभवे छे. सदगतना अंतिम संस्कार पुरा मान-सन्मान साथे थवा जोइअे तेवी बधानी इच्छा छे. परंतु मुश्केली अे छे के तेमनो कोइ सबंधी पण हवे अहीं नथी. शहेरनुं जूनुं स्मशान तो हवे रहयुं नथी. त्यां तो मकानो बनावी देवामां आव्यां छे. साथे साथे हिन्दु विधि प्रमाणे अंतिम विधि केवी रीते कराय ते पण बहु जाणता नथी."पुराना शमशान रामुका बाग तो रहा नहीं, और हमलोगो को हिंदुओ का तरीको मालूम नहीं, शहर में कोइ दूसरा हिन्दु भी नही है..." (पान-७५)

मौलाना आवी माजीनी अंतिम क्रिया हिन्दु रिवाज प्रमाणे ज करवा जणावे छे कारण केइस्लाम बीजाना धर्म अने जजबातनोख्याल राखवानुं शिखवाडे छे. पहेलवान विरोध करे छे,"हिन्दु बुढिया के पीछे हम सब राम नाम सत करें ? अे गलत गलत हे, कुफ्र (पाप) है." (पान-७५-७६) पहेलवानने आम करवाथी पाकिस्तान भ्रष्ट थइ जशे तेवुं लागे छे कब्बन अने ताकीने काठडी कोधी होय छे ते समजावी फजनी नामजनो समय थयो होइ त्यांथी जाय छे. माजीनो कोइ दीकरो हयात न होइ मिर्झा साहेबने दीकरा समान मानतां होइ तेओ ज "मुखाग्नि" आपवा तैयार थाय छे. गुस्से भरायेलो पहेलवान "में अे नहीं होण दनो... किसीकिंमत नहीं होण देणां.." (पान-७८) ओ साले ओ अे पाकिस्तान है..पाकिस्तान..पाक जमीन ..अेन्नू ना पाक करन वाल्यां हीमैं अैसी तैसी कर देवांगा.. (पान-७६) अनवर पण कहे छे के बधो माल सिकन्दर मिर्झाअ हडपी लीधो छे. त्यारे पहेलवान कहे छे "मैं..मैं..पेट फाड के माल कड लवांगा..बेखदे जाओ.." (पान-७६) आम पहेलवानना गुस्सानुं मुख्य कारण माल "हवेली" ज छे ते प्रतिपादित थइ आवे छे.

नाटकनुं सोळमुं अने अंतिम दृश्य औतमवादी द्वारा करुपण अंजाम अपाय छे तेनुं छे दृश्य शरु थाय छे त्यारे पहेलवान अने तेना चमचाओ सिवायनां पात्रो मंच पर हलका प्रकाशमां रतननी मानी अर्थी ऊंचकी रामनाम

सत है / यही तुम्हारी गत हे बोलता बोलता मंच पर धीरे धीरे पसार थइ जाय छे. नाटकमां आ प्रसंग अनिवार्य नथी बनी रहेतो के नथी विशेष बनी रहेतो . लेखक इच्छत तो आ प्रसंग टाळी शकया होत. मंच पर अंधकार पछी पुनः प्रकाश थतां रात्रीनो समय थइ जाय छे मस्जिदमां मौलाना नमाज पढी रहया छे खूणामां लेंप सळगी रहयो छे बुकानी पहेरेला पहेलवान सिराज अने अनवर मौलाना पर हुमलो करवा मस्जिदमां प्रवेशे छे अने दीवो अओलवी नाखे छे. सिराज अने अनवर मौलानाने पकडी लइ मौलानानुं मों बंध करी देछे. पहेलवान मोलानाने घा पर घा मारी, तेमना ज कपडाथी चाकु साफ करी त्रणेय खूब झडपथी बहार नीकळी जाय छे. केटलीक क्षणो बदा मंचनी बंने बाजु नाटकनां पात्रो माथुं नमावी धीरे धीरे मौलानानी लाशनी पासे आवे छे अने खूब गंभीर, करुण अने प्रभावशाळी अवाजमां "खाख उडाते है दिन रात / मीलों फैल गये सहरा / प्यासी धरति जलती है / सूख गये बहते दरिया" गाय छे. गायनना करुण अवाजनी साथे बेकस्टेजमांथी स्त्रीओना रडवानो अवाज गायनमां जोडाय छे मंच पर अंधकार थाय छे. अहीं नाटक पूरुं थाय छे. पहेलवान द्वारा थतुं मौलानानुं खून खूब ज सूचक अने प्रतीकात्मक बनी रहे छे. स्वार्थ खातर धर्म माननार पहेलवान द्वारा उदारताने मानवतानो, सर्वधर्म सदभाावनो धर्म माननारनुं खुन थाय छे मानवता, अमानवता सामे हांफी जाय छे मानवताअे सारपे हंमेशां सहन करवानुं आवे छे.

लाहोरना दिलकूचा जो हारिया जेवा हार्द समा "पोश" विस्तारनी हवेलीमां साकार पामता नाटकना केन्द्रमां ज आ हवेली छे जे समस्यानुं कारण बनी रहे छे आ हवेली ज विभाजननी ट्रेजेडीनी मूक साक्षी - प्रीतक बनी रहे छे. जन्माराओथी ब्रिटिश इन्डियाना लाहौरमां रहेता, शहेरना प्रतिष्ठित झवेरी रतन झवेरीना दबदबानुं द्योतक छे रर ओरडानी हवेली ते पण ब्रिटिश इन्डियामां मुंबइ-दिल्ही करतां पणवधु झाकझमाळ धरावता शहेर लाहोरना हार्द समा विस्तारनी हवेली विाजनना कारणे रतन झवेरीअे तेमना परिवार साथे साव अेम ज मूकीने भागवुं पडयुं हतुं. भरावेला कोलसा, सर सामान पण अेमना अेम ज रही गयो हतो साथे साथे पाछळ रही गइ हती तेमनी वृद्ध मा. (मराठी नवलकथा बनगरवाडीमां दुकाळना कारणे गाम छोडीन जता रहे छे त्यारे वृद्धने ज गाममां छोडीने जता रहे छे.) नाटकनी आ घटना साथे लेखक पोताना अप्रत्यक्ष अनुभवनुं पण अनुसंधान साधे छे जेनाथी नाटकने अेक नवो वळांक मरूयो हतो. विभाजन पूर्वे हिन्दुस्तानमां ऊंचा सरकारी पद पर नौकरी करवावाळा तेमना संबंधी जयारे पाकिस्तान पहोंच्या त्यारे कस्टोडियने संपन्न हिनदु परिवारनी कोठी अपावी. आ कोठी जोवा गया तो छोकराओन ओरडामां रमकडां जेम तेम विखरायेला पडयां हतां, जमवाना टेबल पर प्लेटो पीरसेली पडेली हती. केवी करुणता हशे ! जमतां जमतां नीकळी जवुं पडयुं हशे ! अहीं तमसनां हरमानसिंह अनेबन्नो पण याद आवी जाय. तेमने पण मित्र कीरमखाने आवीने जतां रहेवा जणावतां थोडी ज क्षणोमां जे कांइ हतुं ते अेक पेटीमां लइने चाली नीकळवुं पडे छे. हवेली 'Alotment' अने 'Castodian' विभाजनना महत्त्वनुं घटक तत्त्व बनी रहे छे रतन झवेरीनी खाली पडेली रर ओरडानी हवेली "अेलोटमेन्ट" कारणे ज नाटकमां संघर्षनुं कारण बनी रहे छे माजी हजी हयात छे अने त्यां रहे छे ते जोया जाण्या वगर ज कस्टोडियन सिकन्दर मिर्झाने आ हवेली "अेलोट" करी आपे छे. आ कस्टोडियन अने अेलोटमेन्टना घटकतत्त्वने इस्त चूंगाताइ लिखित सथ्यू दिग्दर्शित "गर्म हवा'- फिल्ममां सुंदर रीते कचकडे कंडारायुं छे. फिलमना सलीम मिर्झानी (सिकन्दर मिर्झा जोडे समांतरेमूकी शकाय.) हवेली पण रहेता हावा छतां खाली समजी अेलोट करवामां आवो छे आअेलोट करनार कस्टोडियन कोण छे ते न समजी शकनार सलीम मिर्झानी मा (सर माजी) हवेली छोडी शकती नथी.तो "मारे बेपुत्रो हता आ कस्टोडियन" नामनो त्रीजो पुत्र हक जतावव कयांथी आव्यो ? जेवो वेधक सवाल पण करे छ. आम नाटकमां Alotment अने Castodian जेवा महत्त्वना घटकतत्त्व हवेलीना कारणे ज उपसी आवे छे आ हवेली पहेलां संघर्ष अने पछी आत्मीयतानुं कारणभूत स्थान पण बने छे सिकन्दर मीरझा "रेफयुजी केम्प" ना त्रासथी आ हवेलीमां माजी रहेतां होवा छतां स्वीकारी तो ले छे पण साथे साथे ते माजीनो "उपया'ह करवानो पण विचार करे छे. परंतु माजीना द्वेष रहीत परोपकारी स्वभावना कारणे माजी तेमना कुटुंबना अेक सभ्य बनी रहे छे. जेथी छेल्ले मिर्झा ज "मुखाग्नि" आपी शके तेवा पुत्र समोवडा संबंधो गूंथाइ जाय छे. सिकन्दर मिर्झाने अेक

समये " हुं आ हवेली नहीं छोडुं" कहेनार माजी सिकन्दर मिर्झाना जानना खतराने पारखीने हवेलीने छोडी जवा तैयार थइ जाय छे आम "हवेली" संघर्षथी आत्मीयताना पथनी साक्षी पण बनी रहे छे आ हवेली सिकन्दर मिर्झा, नासिर वगेरे मुहाजीरो माटे जीवनना अेक अभिन्न अंग जेवा दिवाळीना तहेवारनी साक्षी पण बने छे. दिवाळीना तहेवार निमिते तन्नो अने हमीदा साथे रहीने दीवो पण प्रकटावे छे. मीठाइ वहेंचे छे पूजा करे छे तो नासिर काझमी जेवा शुभेच्छा आपवा पण आवे छे हमीद जेवा तो स्पष्ट कही दे छे के आजे माइअे दिवाळी ना उजवी होत तो लागत के पोताना अस्तित्त्वनो अेक टुकडो कपाइ गयो छे. अेक रीते पहेलवानने माजी करतां आ हवेली ज आंखना कणानी जेम खूंचती हती ते वधु साचुं छे अेम कही शकाय. आ हवेली पडाववा ज पोताना मित्रने उपला ओरडा अेलोट कर्यानुं जणावी तक साधवा मथे छे तो नाटकना अंतभागे माजी मरी जाय छे त्यारे तेनो सागरीत अनवार "सारा माल झडप लीया साले सिकन्दर मिर्झाने" अेवी हैयावराळ काढे छे त्यारे पहेलवान "पेट फाडीने माल कढावीशुं जोता रहो.." जेवो आघोष पण करे छे आ रीते आ हवेली ज संघर्षनुं कारण पण बने छे.

नाटकनुं मुख्य अने केन्द्रीय पात्र माइ-रतन झवेरीनी मा छे लेखके खूबीपूर्वक नाटकमां तेनुं कोइ नाम आप्युं नथी. रतननी मा कहे छे "मा" साथे सनातन अध्यासो संकळायेला छे, जे सधर्मना वाडाथी पर छे लगभग साइठ वरसनी उमरनी आ माजी, पोतानो छोकरो परिवार सहित जीवे छे के मार्यो गयो छे ते नककी करी शकी नथी.पहेलवान जेवा दंगाइओअे हवेली लूंटी हती छतां कोइक रीते पोतानी जात बचाववा ते सफळ रही हती. पोतानी हवेली लूंटाइ गइ छे, दीकराना कोइ खबर नथी, आखा लाहोरमां साव अकेली, सगासंबंधी वगरनी अेकमात्र हिन्दु बची छी छतां कोइपण प्रकारनां रोष द्वेष राख्या वगर सहज अने परोपकारी स्वभावना कारणे लोकोना हृदयमां स्थान पामे छे जे उदारता सहिष्णुता, मानवता अने भाइचारा पर आधारित संस्कृतिनुं प्रतीक बनी रहे छे. साव अचानक आवेला मीरझा परिवारने अपनावी तेने मदद करवामां माने छे. लाहोरनी गली गलीथी वाकेफ छे. सिकन्दर मिर्झानो परिवार लखनउनी सभ्यता अने संस्कृतिनुं प्रतीक छे. माइनो विरोध करे छे त्यारे पण लखनौवी संस्कार जता करता नथी. हमीदा विनम्र, संवेदनशील अने गुणियल महिला छे हवेली अेलोट थइ होवा छतां माइने ज हवेलीनां मालिक गणे छे मिर्झा परिवारनीभाषामां लखनवी छांट जोवा मळे छे.

नाटकनुं खुलपात्र याकुबखान पहेलवान इस्लाम अने पाकिस्तान तरफी छे परंतु ते इमानदार नथी. ते पोकळ अने धूर्त, मककार, चालाक अपराधी प्रवृत्तिनो छे पोताना स्वार्थ माटे धर्मनो सथवारो ले छे. ते परधर्मीनो नाश करवा मागे छे. ते पोतानी वात साथे सहमत न थनारनी (मौलानानी) हत्तय करता पण खचकातो नथी.

नाटकनुं सौथी जीवंत पात्र लेखकने गमता शायर नासिर काझमीनुं पात्र छे. आ पात्र वर्तमान, भविष्य अने अतीत - त्रणे स्तरे अेकसाथे जीवे छे. अलीम चावाला जोडे वास्तवथी कल्पनालोक सुधी पहोंची जाय छे. तो कयारे काव्यात्मक परिमाण पण उपसावी आपे छे. पहेलवान जोडेना सबंधनी तेओ मजा ले छे. फकडपन मस्ती, उमंग, दुःख, जख्म, विस्थापन, निरर्थकता, अने मानव मानव वच्चो भेदनो विरोध नासिर काझमीना जीवननां परिणामो छे. तेओ सतत लाहोरमां पोताना अंबालाने शोधी रहया छे लेखकना मित्र डो. शमीम हनफीअे उर्दूना प्रसिद्ध शायर नासिक काझमीना सर्जनथी लेखकने परिचित कराव्या हता.आ गझलकार पण अंबालाथी विस्थापित थइने लाहौरमां पहोंच्या हता. लेखकने काझमी साहेब अेटला बधा स्पर्शी गया के तेओने नाटकना अेक पात्र बनावी दीधा. तेमनी गझलोअे नाटकमां अमूल्य योग्यदान आप्युं छे. दरेक दृश्यना अंते तेमनी गझलो मूकी छे जे नाटकना दृश्यनो भाव तो रजू करे छे पण संवेदनाने वधु गाढ बनावे छे. तेरमा दृश्यना अंते मूकायेलुं "फूल खूश्बु से जुदा है अब के / यारों उं कैसी हता है अक के.. पतिया रोती है सर पीटती है, कत्ले गुल आम हुआ है अबके." (पान-६७) लाजवाब छे सिकंदर मिर्झाने पहेलवान अने तेना चमचा हेरान न करे तेवा सदआशयथी, अेक समये हवेली न छोडवानीजीदलेनारी पोतानी ज हवेली छोडी पाछली रातना अंधारामां दिल्ली जवा नीकळी पडे छे आ भावने अनुरुप लेखके दृश्यना अंते आ गझल मूकी आपी छे जे भाव स्थितिने वधु स्पष्ट करी आपे छे. परंतु कयारे तेमनी गझल मुखर पण बनी जाय छे अने सहदय भावकने वधु आस्वाद्य न पण लागे तेवुं पण बनी रहे छे. प्रथम दृश्यमां आवता विभाजन माटे सरघस अने प्रदर्शनकारीओना मंचन पछी मूकवामां आवेला गझल दृश्यना

भावने नाटकना चालक बळ तरीके तो जणाय छे परंतु मुखर वधु जणाय छे तेम कहीओ तो खोटुं नथी.''और नतीजे में हिन्दोस्तां बट गया/ये जमी बष्ट गयी आसमां बट गया'' (पान-११) छतांय नासिर काझमी साहेबनुं पात्र अने गझल नाटकने उपकारक तो निवडे ज छे अे स्वीकारवुं रहयुं.

नाटकमां मूळसोता उखडी जवानी वेदना पण सर्जनात्मक रीते निरुपवामां आवी छे बीजा दृश्यमां तन्नो रर ओरडानी हवेली जोइने पोताना घरथी मोटी हवेली होवानुं कहे छे त्यारे सलीम मिर्जा तरत ज पोताना घर, वतनने याद करे छे अने कहे छे हमारे घर की तो बात ही कुछ और थी सहन में रात की रानी के बेल यहां कहा है ? तो छठा दृश्यमां लाहोरने हजी बराबर समजी न शकनार हमीदा पोताना लखनौमां मळता चचींडा (चीभडा) ने ''मिस'' करे छे. अने कहे छे ''अे लेकिन लखनउ का कया मुकाबला'' (पान-३४) हमीदने पोताने त्यां देखाती श्यामा चीडिया अहीं जोवा मळती नथीनी वेदना छे. तो संवेदनशील सर्जक नासिर साहेब लाहौरमां सतत पोतानुं अंबाला शोधता हता जे तेमने कयारेय मरूयुं न हतुं.आथी ज तेओ घर छोडीने जतां माजीने रोकतां कहे छे के ''तुम्हे लाहौर कही और नहीं मिलेगा..उसी तरह जैसे मुजे अंबाला कहीं और नहीं मिला..'' (पान-६६) तो हमीदने कहे छे मैंने उसे यहां तलाश किया है..उसकी तलास मेरे लिये तरककी पसंद अदब और इस्लामी अदबमें बडा मसला था.. जब में यहां शुरु शुरु में आया तो उन सब चीजो की तलास की जिन्हें दिलों जान से चाहता था.. तो रतननी मा पण कहे छे : ''पुत्तर अपना वतन त अपना इ होंदा है..उसदा कोइ बदल नहीं'' (पान-प०) आम आ नाटकनां मुख्य पात्रो लाहौरमां सतत पोतानुं वतन शोधता रहे छछे जयांथी तेओ मूळसोता उखडीने आव्या छे, तेथी व्यथित पण छे.

आ नाटकनी खूबी अे छे के ते त्रण प्रकारना जागतिक स्तर पर चाले छे. पहेलुं नासिर काझमी, मिर्झा, हमीदा अने माइना स्तरे चाली रहयुं छे. नासिक काझमीनुं जागीतक स्तर छे ते नितांत काव्यात्त्मक छे पण आ काव्यात्त्मकता नरी कोरी नथी. अेमना माध्यमथी जीवन अने जगतना सबंधो, स्थूळ अने भौतिक परिस्थितिओने समजी शकाय छे. तेओ मानवताना प्रखर समर्जक छे ते धर्म, जाति, देश, समाज, भाषा करतां मानवताने ऊंची माने छे आ रीते नासिर काझमीना विचार विकसित अने सनातन मूल्यो आधारित छे जे सहिष्णुता अने मानवताने प्रस्थिापित करे छे बीजुं जागतिक स्तर मौलवी इकराम उदीननुं छे. मौलवी अणीशुद्ध इस्लामी जगत धराव छे तेमां तेओ कोइ बांधछोड करता नथी. मौलना कुरानने अनुसरी जीवन जगतना आदर्शो नककी करे छे जेना कारणे मानवता अनेसर्वधर्म सदभावना आवे छे. आ शुद्धता ज स्वार्थ खातर इस्लामनो उपयोग करनार पहेलवान माटे व्यवधानरुप बनावे छे अने छेवटे मोतने भेटे छे. त्रीजुं जागतिक स्तर माइ, मिर्झा अने हमीदा बगमना माध्यमथी निरुपायुं छे. तेओ न तो धर्मने ऊंडाणथी जणावे छे के समजे छे तेओ कवि पण नथी जे जगतने कल्पनाथी जुअे तेमनी पासे कोइ विझडम के विझन पण नथी मात्र परंपरा अनुसार जीवन जीवी रहया छे. मोटा मोटा शब्दो अने मोटी मोटी आदर्शनी वातो नथी करता पण तेओ परोपकार, सहयोग, अेकबीजानां सन्मान साथे जीवन व्यतीत करनार छे आम विविध स्तरना जगत जोवा मळे छे.

आ नाटकने द्विराष्ट्र नीतिनो विरोध करनार तेमज नारी व्यथानुं निरुपण करनार तरीके पण केटलाक मूलवे छे. अगियारमा दृश्यमां दिवाळीना दीवा करतां करतां तन्नो जन्माराओथी हिन्दु मुसलमान साथे रहेवा छतां पाकिस्तान केम बन्युं जेवो वेधक सवाल करे छे पाकिस्तान केम बन्युं ते आज दिन सुधी जेओ भोग बन्या छे ते के जेओ बची गया छे तेमने खबर पडी नथी. कोनो स्वार्थ हतो, कोनी भूल हती, कोनी चालकी हती अे तो काळना खप्परमां रकतपात, वलोपात अने सनेपातना (पागलपन-घणा पागल बनी गया हता) ढग नीचे भरखाइ गयुं छे. हमीदा पण खूब ज सूचक जवाब आपे छे.''तुम अपने अब्बासे पूछ'' (पान-प४) विभाजन वखते विभाजन माटे जे कांइ राजनीति थइ, लगभग ते बधी राजनीति पुरुषोअे करी, परंतु इतिहास साक्षी छे के विभाजनमां सौथी वधारे भोगववानो वारो स्त्रीओने आव्यो हतो. लाखो स्त्रीओ बळात्त्कारनो भोग बनी. अपहरण थयां, विखूटी पडी गइ हती. स्त्रीओ भोग बनी तेने ''जन्नत के लीये'',''तमस'',''पींजर'',''गर्म हवा'',''गदर'',''ट्रेन टु पाकिस्तान''''खामोश पाणी'' अे कळाकीयरीत निरुप्युं छे.

"वतनपरस्ती" अने "मानवधर्म" ने आलेखता नाटकनी वात नाटकना मौलवीना पा नंबर ४३ ना संवादथी समेटवी योग्य बनी रहे तेम छे : "जुल्म को जुल्म से खत्म नहीं कर सकदे.. नेकी, शराफत, इमानदारीसे जुलम खत्म होंदा है.जानवर तक प्यार नाल पालतू बन जांदा है.. तुसी इसान ते जुलम करके खुदा नू की मुंह दिखाओगे ? इस्लाम जुल्म के खिलाफ है... जो जुलम करदे ने ओ मुसलमान नहीं है.. समझे.. इरशाद है कि तुम जमीन वालो पर रहम करो, आसमान वाला तुम पर रहम करेगा."

संदर्भ पुस्तको :

१. Indian Partitioned, Ed. Mushiral Hasan, Roli Books Pvt.Revised ed. 1997.
२. Mourning The Nation, Bhaskar Sarkar, orient Blackswan pvt. 2010.
३. South Asian Cinema Ed. L.M.Joshi, South Asian Cinema Foundation, London, Issu-5 & 6
४. तमस, भीष्म साहनी, राजकमल प्रकाशन-पटना, पुनर्मद्रण-१९९५
५. उर्दू-हिन्दी कोश - सं. आचार्य रामचंद्र वर्मा, शब्दलोक प्रकाशन, वाराणसी.
६. उर्दू-हिन्दी कोश-सं.रामनारायणलाल अरुणकुमार, छठी आवृत्ति-२०००.
७. साम्प्रदायिक सदभाव की कहानिया, सं.गिरिराज शरण, प्रभात प्रकाशन, नवी दिल्ही, १९९६.
८. भारत विभाजन और हिन्दी कथा साहित्त्य, डो.प्रमिला अग्रवाल, जयभारती प्रकाशन-नवी दिल्ली, प्र.सं.१९९२.
९. देश विभाजन और हिन्दी कथा साहित्त्य, डो.सूर्यनारायण रणसुभे, संचयन- कानपुर, प्र.सं.१९८७.
१०. भारत विभाजन की अन्कथा, प्रियंवद, भारतीय ज्ञानपीठ-नवी दिल्ली, प्र.आ. २०१४
११. विभाजननी व्यथा, शरीफा, वीजळीवाळा, गूर्जर ग्रंथ रत्न कार्यालय-अमदावाद, प्र.आ. २०१४.
१२. भरतवाकय, ले.भरत महेताप्र. का. पोते प्र.आ.-२००३

Dr. Hitesh Gandhi
M.Phil., Ph.D. , Supervising Teacher for Ph.D. and Associate Professor
Ratansinhji Mahida College, Rajpipla, Gujarat.

LBP PUBLICATION